ग्रन्थमाला 'धर्म' : खण्ड १

धर्मका मूलभूत विवेचन

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अप्रैल २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९६ लाख ५४ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

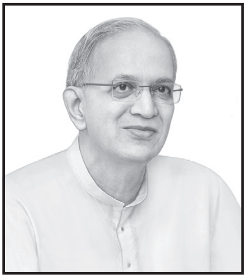

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २०.३.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – **www.Sanatan.org**)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९८

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक ‘सनातन प्रभात’में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

卐 **सनातनके ‘अध्यात्मशास्त्र’ सम्बन्धी ग्रन्थोंकी संयुक्त भूमिका** ८

卐 **भूमिका** १३

१. व्युत्पत्ति, व्याख्या तथा अर्थ १४

२. समानार्थी शब्द १८

३. निर्मिति २६

४. धर्म तथा धर्मी (ईश्वर) २६

५. धर्मका महत्त्व २७

६. धर्मका रहस्य ३१

७. धर्मसिद्धान्त ३२

७ अ. ईश्वरका अस्तित्व ३३

७ आ. अनेक देवता एवं अनेक साधनामार्ग ३३

७ इ. श्रीविग्रहपूजन (मूर्तिपूजा) ७ ई. ऋणकल्पना ३४

७ उ. वर्णाश्रमकल्पना ७ ऊ. पुरुषार्थकल्पना ३५

७ ए. अधर्माचरणियोंपर दंड व अहिंसा ७ ऐ. पुनर्जन्म ४०

७ ओ. स्वर्ग और नरक ७ औ. सदेह मुक्ति ४१

८. धर्मलक्षण ४२

९. धर्मप्रमाण (शास्त्रप्रमाण) ४३

९ अ. प्रमाण किसे कहते हैं ? ४३

९ आ. शास्त्रप्रमाण और बुद्धिप्रमाण ४३

९ इ. प्रकार ४४

१०. धर्मके प्रकार ४८

卐 'धर्म'के विषयमें गहन ज्ञान ५६

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें 'प.पू.' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

सनातनकी दो सद्गुरुओंके नामोंसे पहले विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका-वाचनद्वारा सप्तर्षिने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्‌शक्ति (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी' व सद्गुरु (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको 'श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजी' सम्बोधित किया जा रहा है। ये सन्तद्वयी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं ।

भूमिका

एक ओर कहते हैं कि 'जीवनरूपी भवसागरसे तरनेके लिए धर्मके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं'; तो दूसरी ओर कुछ लोग कहते हैं, 'धर्म, अफीमकी गोली है ।' इस प्रकारके परस्पर-विरोधी वचन सुनकर सामान्य व्यक्ति भ्रमित हो जाता है । 'धर्म'का नाम लेते ही लोगोंको हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध आदि का स्मरण होता है, जबकि कुछ लोगोंको भारतके धर्मनिरपेक्ष होनेका स्मरण होता है और वे धर्मके विषयको अस्पृश्य मान लेते हैं । श्री शंकराचार्यजीने धर्मकी व्याख्या इस प्रकार की है - धर्म वह है जिससे समाजव्यवस्था उत्तम रहती है और प्रत्येक प्राणिमात्रकी ऐहिक (लौकिक / भौतिक) तथा पारलौकिक उन्नति साध्य होती है । इस व्याख्यासे धर्मकी महत्ता और मनुष्यजीवनमें धर्मका अनन्यसाधारण महत्त्व ज्ञात होता है ।

यही विचार यदि राष्ट्रके सन्दर्भमें करें, तो धर्म राष्ट्रका प्राण है । इसलिए समाजका जीवन धर्माधिष्ठित होगा, तो ही राष्ट्र चिरंजीवी बनेगा अन्यथा नष्ट होगा । वर्तमानमें धर्मसम्बन्धी अनुचित धारणाओंको दूर करना आवश्यक है । समग्र मनुष्यजातिको संगठित करने हेतु धर्म अनिवार्य है । इस दृष्टिकोणसे इस ग्रन्थमें धर्म शब्दका अर्थ, धर्मके विविध अंग तथा रहस्य, धर्मसिद्धान्त, धर्म और संस्कृति तथा नीतिकी भिन्नता, धर्मग्लानि और अवतार, धर्मके सन्दर्भमें भारतका महत्त्व, धर्मराज्यकी (हिन्दू राष्ट्रकी) स्थापना आदि विविध सूत्रोंका विवेचन किया गया है । इस ग्रन्थमें वेद, दर्शन, स्मृति, रामायण, महाभारत आदि मूल आधार धर्मग्रन्थोंका उल्लेख विस्तारपूर्वक किया है । इस ग्रन्थमें पृष्ठसंख्या अधिक न हो जाए, इसलिए धर्मग्रन्थोंसम्बन्धी गहन ज्ञान सनातनके 'वेद' एवं 'दर्शन, स्मृति एवं पुराण' इन ग्रन्थोंमें दिया है । धर्मद्वारा विहित चातुर्वर्ण तथा आश्रमव्यवस्था भारतीय समाजिक जीवनकी नींव हैं; इनका ज्ञान भी सनातनके 'वर्णाश्रमव्यवस्था' इस ग्रन्थमें दिया है । क्षात्रधर्म एवं राजधर्म, धर्मके इन भिन्न अंगोंका ज्ञान सनातनके 'क्षात्रधर्म एवं राजधर्म' ग्रन्थमें दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस ग्रन्थको पढकर आप धार्मिक बनें, साधनाके प्रति उन्मुख हों एवं साधना करें । - **संकलनकर्ता**